चतुर्थ अध्याय

शिवभारत में चित्रित शिवाजी का जीवन चरित्र ।

चतुर्थ अध्याय

.....

शिवभारत में चित्रित शिवाजी का जीवन-चरित्र या व्यक्तित्व

शिवभारत एक ऐतिहासिक महाकाव्य है तथा ऐतिहासिक काव्य की कथा में जिस प्रकार इतिहास तथा कल्पना का मिश्रण होता है, उसी प्रकार पात्र भी ऐतिहासिक तथा काल्पनिक होते हैं । कवि ऐतिहासिक पात्रों के ऐतिहासिक रूपों के अतिरिक्त अन्य रूपों को भी उपस्थित करता है । वस्तुत: विशुद्ध ऐतिहासिक पात्र इतिहास के कठपुतले मात्र होते हैं । उनमें जीवन का स्पन्दन नहीं होता, मृत्यु की जड़ता होती है । कवि इन पात्रों में जीवन का स्पन्दन भरता है । वह ऐतिहासिक पात्रों के ऐतिहासिक रूपों को सुरक्षित रखते हुए उनका एक अन्य रूप भी प्रस्तुत करता है, जो इतिहास का नहीं, अपितु वास्तविक जीवन का सत्य होता है ।

'शिवभारत' में चित्रित पात्रों का चरित्र प्रभावशाली है । इसके पात्र सरल, स्वाभाविक, गतिशील तथा संवेदनशील है तथा इसी लोक के वासी हैं । इन पात्रों के साथ पाठक साधारणीकरण का अनुभव करते हुए शिक्षा व आनन्द प्राप्त करता है । 'शिवभारत' के ऐतिहासिक होने के कारण इसमें ऐतिहासिक तथा काल्पनिक दोनों प्रकार के पात्र हैं । ऐतिहासिक पात्र केवल इतिहास के कठपुतले ही नहीं हैं इनमें प्राणों का स्पन्दन भी है । इनके केवल राजनीतिक तथा अधिक से अधिक धार्मिक तथा सामाजिक पक्षों को ही उपस्थित नहीं किया गया, अपितु उनकी सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक भावनाएं भी अभिव्यंजित की गई है । जैसे शिवाजी की मुस्लमानों से युद्ध करने की क्या मूल भावना थी इत्यादि ।

'शिवभारत' महाकाव्य का नायक शिवाजी है । संस्कृत काव्य-शास्त्र के अनुसार नायक आदर्श तथा सर्वगुण सम्पन्न होना चाहिए । यदि काव्य के नायक का कोई अनुचित या विरुद्ध आचरण है, तो उसका ५। तो परित्याग कर देना चाहिए या उसकी दूसरे प्रकार से कल्पना करनी चाहिए ।[1] केवल इतना ही नहीं यदि कथा के प्रसंग में कोई स्थिति गुण के अनुरूप न हो तो उसका परित्याग करके रसोचित कथा की कल्पना करनी चाहिए ।[2] अर्थात् संस्कृत काव्यशास्त्र में यथार्थ-चित्रण की अपेक्षा आदर्श का महत्व अधिक है ।

शिवाजी

'शिवभारत' नाम से ही स्पष्ट हो जाता है कि शिवाजी इस काव्य के नायक हैं । आचार्य विश्वनाथ ने महाकाव्य के लक्षण गिनाते हुए कहा है कि -

"कवेर्वृत्तस्य वा नाम्ना नायकस्येतरस्य वा ।"[3]

इसके अतिरिक्त भी महाकाव्य के नायक को साहित्य-मर्मज्ञों ने धीरोदात्त प्रकृतिवाला माना है । आचार्य विश्वनाथ ने "

---

1. यत्स्यादनुचितं वस्तु नायकस्य रसस्य वा ।
   विरुद्धं तत्परित्याज्यमन्यथा वा प्रकल्पयेत् ॥
   साहित्य दर्पण 6/50

2. इतिवृत्तवशायातां त्यक्त्वाननुगुणां स्थितिम् ।
   उत्प्रेक्ष्याप्यन्तराभीष्टरसोचितकथोन्नयः ।।
   ध्वन्यालोक, तृतीय उद्योत, पृ0 329

3. साहित्य-दर्पण, विश्वनाथ, 6/324

"सद्वंश: क्षत्रियोवापिधीरोदात्त गुणान्वित: ।"[1]

कहकर नायक को , धीरोदात्त नायक के गुणों से युक्त होना चाहिए, ऐसा माना है । दशरूपककार ने धीरोदात्त नायक का लक्षण इस प्रकार दिया है -

महासत्वोऽतिगम्भीर: क्षमावानविकत्थन: ।
स्थिरो निगूढाहंकारो धीरोदात्तो दृढव्रत: ।।[2]

'अर्थात धीरोदात्त नायक महासत्वशाली, अत्यन्त गम्भीर,क्षमाशील,अविकत्थन, स्थिर ।अचंचलमनवाता। निगूढ अहंकार वाला तथा दृढव्रती होता है ।' नायक के इन्हीं गुणों को ध्यान में रखते हुए शिवभारत का नायक शिवाजी ही निश्चित होता है । वह सद्वंश अर्थात् सूर्यवंशी क्षत्रिय राजाओं के वंश में उत्पन्न तथा इतिहास - प्रसिद्ध व्यक्ति है । उसके चरित्र में सभी गुण विद्यमान हैं ।

'शिवभारत' एक ऐतिहासिक महाकाव्य है अत: इसमें इतिहास के साथ ही साथ काव्य सम्बन्धी विशेषताओं का भी पूर्णरूपेण समावेश किया गया है। कवि ने 'शिवभारत' के प्रारम्भ में ही विद्वानों के मुख से शिवाजी के लिए विष्णु का अवतार, प्रतापी, इन्द्रियों को जीतने वाला, धनुर्धारियों में श्रेष्ठ,देव ब्राह्मण। तथा गायों का रक्षक इत्यादि अनेक प्रशंसात्मक शब्दों को कहलवाया है ।[3] शिवाजी

---

1. साहित्यदर्पण, विश्वनाथ, 6/315-316
2. दशरूपक , धनंजय , 2/4
3. विष्णोरंशो विशेषेण लोकपालांशसंभव: ।
   मनस्वी सुप्रसन्नात्मा प्रतापी विजितेन्द्रिय: ।।
   भीमादपि महाभीम: सीमा सर्वधनुर्भृताम् ।
   धीमानुदारचरित: श्रीमानद्भुतविक्रम: ।।
   कृती कृतज्ञ: सुकृतो कृतात्मा कृतलक्षण: ।
   वक्ता वाक्यस्य सत्यस्य श्रोता चातिविचक्षण: ।।
   देवद्विजगवां गोप्ता दुर्दान्तियवनान्तक: ।
   प्रसन्नानां परित्राता प्रजानां प्रियकारक: ।।
   शिवभारत,अध्याय ।, श्लो० 12-15 , पृ० ।

दक्षिण के राजा शाह जी के पुत्र थे कवि ने शिवाजी को पर्वतों का स्वामी तथा साक्षात् नारायण का अंश कहा है ।[1] कवि का शिवाजो को विष्णु का अवतार मानना तथा उसका [शिवाजो को] अतिमानवीय गुणों से युक्त कहना । ये सब काव्यमय वर्णन है अर्थात् काव्य होने के कारण कवि ने इस प्रकार का वर्णन किया है ।

कवि ने शिवाजो के चरित्र को 'भरत के समान भारत' तथा अमानुष चरित्र कहा है ।[2] शिवाजी को कलियुग के पापों का हरण करने वाला तथा मानवचित्तों को हरण करने वाला कहा है ।[3]

शिवभारत के आधार पर शिवाजी एक अवतार है जिसका जन्म ही अत्याचारों को समाप्त करने के लिए तथा धर्म की स्थापना के लिए हुआ है । शिवाजी जब अपनी माता के गर्भ में स्थित थे तो उनको माता को पर्वतों पर जाना, सिंहासन पर बैठना, ऊँचो आवाज़ में बात करना, दुन्दुभि का शब्द सुनना

---

1. योऽयं विजयते वीरः पर्वतानामधीश्वरः ।
   दक्षिणात्यो महाराजः शाहराजात्मजः शिवः साक्षान्नारायणस्यांशैस्त्रि-
   दशद्वेषिदारणः । ....।।
   शिवभारत, अध्याय ।, श्लो० 24-25 , पृ० 2

2. .....।
   चरितं शिवराजस्य भरतस्येव भारतम् ।। 22
   अहो कथमहं कुर्यां भारतप्रतिमं महत् ।
   अमानुषचरित्रस्य शिवस्यैतत्समोहितम् ।। 29
   शिवभारत, अध्याय ।, श्लो० 22 तथा 29, पृ० 2

3. शिवभारत, अध्याय ।, श्लो० , 23, पृ० 2

इत्यादि । अनेक प्रकार के दोहद होने लगे । जिनसे गर्भ स्थित शिशु के गुणों का तथा उसके राजा होने के लक्षणों की प्रतीति हो रही है । किन्तु ये सब काव्यमय वर्णन है ऐतिहासिक नहीं ।

कवि ने वर्णन किया है कि "शिवाजी की जन्मकुण्डली देख कर उस समय सभा में स्थित सिद्धान्तों को जानने वालों ने शिवाजी का भविष्य इस प्रकार बता दिया कि यह बालक अतिमानव कार्य करेगा , म्लेच्छों को मार कर महान कीर्ति का विस्तार करेगा । दक्षिण , पश्चिम तथा पूर्वी दिशा को अपने भुजतेज से जीतकर, उत्तर दिशा में अपना राज्य स्थापित करेगा, सागर को भी अपने वश में करेगा, सभी दिशाओं से धन इकट्ठा करके लायेगा, पर्वत दुर्ग, वन दुर्ग, जल दुर्ग तथा स्थल दुर्गों की भी रक्षा करेगा अत्यधिक दुर्गम मार्ग तथा गहन पर्वतों में भी, नदियों तथा समुद्रों में भी यह [शिवाजी] अप्रतिहत गतिवाला होगा[पाण्ड्य, द्रविड, लाट, कर्नाटक, केरल, करहाट, वेराट, आन्ध्र ,मालव, गुर्जर, आर्यवर्त तथा दुष्ट म्लेच्छों ने जहाँ पर अपना राज्य बना लिया है वहाँ पर विजय प्राप्त करेगा । कुरु, जांगल, कौशल, सौराष्ट्र,गान्धार, सैन्धव, कलिंग, कामरूप अंगद, काम्वोज, कैकयी, पुलिन्द, काश्मीर, मत्स्य, मगध, विदेह, काशी, पांचाल, चेदि , कुन्त

---

1. अथाध्यासनमश्वीयां द्विपानां द्वीपिनां तथा ।
स्वर्णसिंहासने स्थैर्य सितच्छत्रतलेऽपि च ।।

केतनोन्नमनं चोच्चैश्चारुचामरवीजनम् ।
श्रुतिर्दुन्दुभिशब्दानां कृतिः संगरकर्मणाम् ।।

धारणं काण्डकोदण्डशक्तिनिस्त्रिंशवर्मणाम् ।
प्रसाधनं पर्वतानां साधनं विजयश्रियाम् ।।

महानादैश्चभिररतिर्धर्मस्य स्थापने मतिः ।
समभूवन्नमुष्यस्यां दोहदानि दिने दिने ।।
शिवभारत, अध्याय 6, श्लो0 15-18, पृ0 16

आदि पर विजय प्राप्त करेगा तथा हूण, हेम, उण्ड्र, पुण्ड्र ,ललित्य इत्यादि जातियों पर भी विजय प्राप्त करेगा । जैसे पहले पृथु राजा हुआ तथा पुरूरवा, अम्बरीष, मान्धाता, भरत, राम दशरथ, ययाति, नहुष तथा युधिष्ठिर इत्यादि राजा हुए वैसे ही यह शाहराज का पुत्र शिवाजी राजा होगा ।"[1]

कवि का यह वर्णन काल्पनिक तथा अतिशयोक्ति-पूर्ण है ।

शिवाजी को अत्यधिक गुणवान[2] तथा पढ़ने-लिखने में अत्यधिक चतुर तथा तीव्र बुद्धि वाला कहा है । जब तक गुरू एक अक्षर बोलते तब तक शिवाजी दूसरा भी लिखकर दिखा देते थे ।[3]

कवि ने शिवाजी को अनेक विद्याओं में निपुण कहा है यथा -

श्रुतिस्मृतिपुराणेषु भारते दण्डनीतिषु ।
समस्तेष्वपि शास्त्रेषु काव्ये रामायणे तथा ।।
व्यायामे वास्तुविद्यायां होरासु गणितेष्वपि ।
धनुर्वेदचिकित्सायांमते सामुद्रिके पुनः ।।
तासु तासु च भावासु छन्दःसु च सुभाषिते ।
चर्यास्वभरथाश्वानां तथा तल्लक्षणेष्वपि ।।[4]

---

1. शिवभारत, अध्याय 6, श्लो० 64-80 , पृ० 17-18
2. शिवभारत, अध्याय 9, श्लो० 62 , पृ० 26
3. शिवभारत, अध्याय 9, श्लो० 71-72 , पृ० 27
4. शिवभारत्, अध्याय 10 , श्लो० 34-36, पृ० 28

इस प्रकार शिवभारतकार के अनुसार शिवाजी पूर्णरूप से शिक्षित थे। तथा इतिहासकार सरदेसाई के अनुसार भी शिवाजी ने शिक्षा प्राप्त की थी। सरकार का शिवाजी को अशिक्षित मानना उचित नहीं है। कवि शिवाजी का समकालीन था अतः कवि के वर्णन की महत्ता और भी बढ़ जाती है। कवि का यह वर्णन ऐतिहासिक है।

शिवाजी पितृभक्त थे अपने पिता शाह जी को मुस्तुफ़ाखान द्वारा बन्दी बनाए जाने की बात सुनकर शिवाजी आदिलशाह से अपकार का बदला लेने के लिए तैयार हो जाते हैं।[1] अपने पिता शाहजी को आदिलशाह की कैद से मुक्ति के लिए शिवाजी स्वयं युद्ध करने की बात करते हैं और कहते हैं कि मैं स्वयं युद्ध करके अपने पिता को छुड़ाऊँगा।[2]

शिवाजी को एक आज्ञाकारीपुत्र के रूप में दर्शाया है जो कि अपने पिता शाह जी की आज्ञा से दानों किले आदिलशाह को दे देता है। सिंहगढ़ शिवाजी के पास था तथा पुरंदर सम्भा जी के पास था।[3] इनको दे कर शिवाजी ने अपने पिता शाहजी को आदिलशाह की कैद से मुक्त करा लिया।

---

1. निशम्य शिवराजोऽपि शाहराजदशामिमाम्।
   येदिलस्यापकाराय प्रतिजज्ञे प्रतापवान्॥
   शिवभारत, अध्याय 13, श्लो० 4, पृ० 36
2. शिवभारत, अध्याय 13, श्लो० 28, पृ० 36
3. अथ शंभुर्महाबाहुरनतिक्रमणीयया।
   बिंगरूरं पुरं सद्यस्तत्याज पितुराज्ञया॥

   समर्थोऽप्याहवं कर्तुमदेयमपि सर्वथा।
   शिवः सिंहाचलं प्रादात् पित्रर्थाय गरीयसे॥
   शिवभारत, अध्याय 15, श्लो० 51-52, पृ० 47

कवि का यह वर्णन ऐतिहासिक है । इतिहासकार श्री गो०स० सरदेसाई ने भी अपनी पुस्तक 'मराठों का नवीन इतिहास' में कवीन्द्र परमानन्द के इसी वर्णन को आधार मानकर, आदिलशाह द्वारा शाहजी को बन्दी बनाए जाने तथा मुक्त करने के वृतान्त को लिखा है ।[1]

शिवाजी अत्यधिक वीर था उसे अपने बाहुबल पर पूर्ण विश्वास था, तभी तो सिंहगढ़ आदिलशाह को देने के बाद शिवाजी कहते हैं कि यदि मैं सिंहगढ़ आदिलशाह को स्वयं न देता तो मेरे हाथ में रहते हुए उसे दूसरा कोई कैसे ले सकता था ?[2] अर्थात् कोई नहीं ले सकता था । इससे स्पष्ट है शिवाजी को अपनी शक्ति पर पूर्ण विश्वास था ।

शिवाजी का शत्रु स्वयं आदिलशाह भी उसकी वीरता के विषय में सोचकर दिन-रात चैन से सो भी नहीं पाता । वह अफजलखान से कहता है कि तू अत्यधिक वीर है, किन्तु तेरे होते हुए भी शाहजी का पुत्र शिवाजी मुझसे रात-दिन द्रोह करता है ।[3]

शिवाजी के द्वारा म्लेच्छ धर्म का नाश किया जा रहा है । ऐसे छली इस शिवाजी ने सह्याद्रि पर्वत का आश्रय लिया हुआ है अर्थात् वह सह्याद्रि पर स्थित है ये मुझे [आदिलशाह] असह्य हो रहा है । चन्द्रराज को पुत्र तथा अमात्यों

---

1. मराठों का नवीन इतिहास, गो०स०सरदेसाई, पृ० 87-88

2. सोऽस्मास्वयिर्हि मां तर्हि नादास्यत्सिंहपर्वतम् ।
   कोऽन्यथा तरसा जेष्यतमिमं मत्करेस्थितम् ।।
   शिवभारत, अध्याय 16, श्लो० 5, पृ० 47

3. एतादृशि महावीरे दुर्जये त्वयि जाग्रति ।
   मह्यं द्रुह्यत्यहोरात्रमहो शाहसुत: शिव: ।।
   शिवभारत, अध्याय 17, श्लो० 11 , पृ० 50

के साथ जीतकर इसने [शिवाजी ने] जयवल्ली पर अधिकार कर लिया तथा मेरे द्वारा समझौते की इच्छा से औरंगजेब को, निजामशाह से लिया हुआ पर्वत दे दिया गया था, वह भी इस शिवाजी ने अपने पराक्रम से छीन लिया ।[1] इस प्रकार आदिलशाह के इन बचनों से सिद्ध हो जाता है कि शिवाजी अत्यधिक वीर तथा पराक्रमी था । आदिलशाह भी उसके आतंक से आतंकित सा प्रतीत होता है ।

कवि ने आदिलशाह के मुख से शिवाजी की प्रशंसा कराई है । वह कहता है कि यह शिवाजी कम आयु होते हुए भी डरता नहीं है,अद्भुत पराक्रम वाला है ।[2]

---

1. हन्त तेन महोत्साहवता वीरेण मानिना ।
   स्वधर्माभिनिविष्टेन म्लेच्छधर्मो विहन्यते ।।

   क्रमेणाक्रम्य विकटां कण्ठीख इवाटवीम् ।
   एष आत्मवशो नैव मन्यते मम शासनम् ।।

   छलप्रचलचित्तस्य खलस्यास्य समाश्रयात् ।
   मम चित्ते चिरं धत्ते शैल: सह्योऽप्यसह्यताम् ।।

   स चन्द्रराजं निर्जित्य पुत्रामात्यसमन्वितम् ।
   जयवल्लीं च नगरीमग्रहीन्निरग्रह: ।।

   दत्तोऽवरंगशाहाय मया य: सन्धिकाम्यया ।
   नीवृन्निजामशाहस्य सपर्वतवनाकर: ।।
   स तेनात्मवशेनास्मानवमत्य प्रतापिना ।
   परानप्यविनीतेन प्रसह्य स्ववशीकृत: ।।
   शिवभारत, अध्याय 17, श्लो० 12-18 , पृ० 50

   नो बिभ्यते परभयादयमल्पवया अपि ।
   अतिक्रामति चाप्यस्मान् विस्मायक पराक्रम: ।।
   शिवभारत, अध्याय 17, श्लो० 26 , पृ० 50

शिवाजी निडर तथा पराक्रमी है । शत्रु भी इसके पराक्रम से भय-भीत है । आदिलशाह कहता है कि ऐसा लगता है कि यह शिवाजी धीरे-धीरे हमारे सम्पूर्ण राज्य पर अधिकार कर लेगा । उस पर विजय प्राप्त करने के लिए मैंने जिन जिन वीरों को भेजा वे वापिस नहीं आए ।[1]

शिवाजी अत्यधिक धार्मिक थे तथा किसी भी कार्य को करने से पहले वे पूजा तथा दानादि किया करते थे इसीलिए अफ़ज़लखान से मिलने जाने से पहले शिवाजी शिव की पूजा करते हैं तथा ब्राह्मण को सोने के सींगवाली गाय (बच्चे के साथ) दान में देते हैं ।[2]

---

1. शिवभारत, अध्याय 17, श्लो० 28-29, पृ० 51
2. विविधाभिर्विधाभिर्वै यथादिष्टं पुरोधसा ।
   तथा नित्यवदभ्यर्च्य देवदेवं वृषध्वजम् ।।

   नित्यदानविधिं कृत्वा भुक्त्वा स्वल्पमनल्पधीः ।
   सम्यगाचम्य च मुहुर्मुहुरम्बु शुचि स्वयम् ।।

   चिन्तयित्वा चतां देवीं तुलजां क्षणमात्मनि ।
   विधाय चाऽऽत्मनो वेषं तदात्वोचितमात्मना ।।

   निजमप्रतिमं लोके विलोक्य मुकुरे मुखम् ।
   उत्थाय चाऽऽसनात्सद्यः प्रणिपत्य पुरोहितम् ।।

   द्विजानभ्यर्च्य चैः सर्वैराशंसितशुभोदयः ।
   दधिदूर्वाक्षतान्स्पृष्ट्वा दृष्ट्वा मार्तण्डमण्डलम् ।।

   स्थितामभ्येत्य च पुरः सवत्सां स्वर्णसंयुताम् ।
   वितीर्य सुरभिं सद्यः सगुणायाग्रजन्मने ।।
   शिवभारत, अध्याय 21, श्लो० 11-16 , पृ० 60

शिवाजी जब अफ़ज़लखान से मिलने के लिए गए तो उस समय उन्होंने [शिवाजी ने] किस प्रकार के वस्त्र पहने थे तथा शिवाजी कैसे लग रहे थे कवि ने इसका वर्णन किया है - "सर पर जो पगड़ी थी वह अत्यधिक शोभित हो रही थी तथा केसरी रंग का अंगरखा पहने थे । शिवाजी जो शिव वर्म मन्त्र से ही ढक गए थे, ऐसे उनके शरीर को कवच की आवश्यकता ही नहीं थी । शिवाजी के एक हाथ में तलवार तथा दूसरे में पट्टा था । इस प्रकार शिवाजी हाथ में नन्दक तलवार तथा गदा धारण करने वाले विष्णु के समान लग रहे थे ।[1] कवि ने शिवाजी के आन्त - रिक स्वरूप अर्थात् [गुण] के साथ ही साथ बाह्य स्वरूप का भी सुन्दर चित्रण किया है । शिवाजी जो कि ठोड़ी पर दाढ़ी होने से भयंकर लग रहे थे ऐसे धीर अर्थात् धैर्यशाली तथा वीर [शिवाजी] को शत्रु ने देख लिया ।[2] कवि का यह वर्णन पूर्ण-रूपेण काल्पनिक है ।

---

1. उष्णीषेणेव शुचिना व्यभादुत्तंसधारिणा ।
   काश्मीरजपृष रंजितेनाङ्गरक्षकेन च ।।

   शिववर्म भृशवलः सवृतः शिववर्मणा ।
   तस्य वज्रशरीरस्य किं कार्यं तेन वर्मणा ।।

   कृपाणं पाणिनैकेन बिभ्राणोऽन्येन पट्टिशम् ।
   स नन्दक गदाहस्तः साक्षाद्धरिरदृश्यत ।।

   शिवभारत, अध्याय 21, श्लो० 19 -21 , पृ० 60

2. शिवभारत, अध्याय 21, श्लो० 23, पृ० 61

शिवाजी अत्यधिक बलशाली तथा समयानुसार कार्य करने वाला था । जब अफ़ज़लखान शिवाजी की गर्दन दबाकर छोटी तलवार से शिवाजी की कुक्षि में प्रहार करता है तो शिवाजी अपनी गर्दन छुड़ाकर अत्यधिक गम्भीर ऐसी आवाज करते हैं तथा अफ़ज़लखान को धोखा दे देते हैं तथा कहते हैं कि ले ये मेरी तलवार मुझे कैद कर ले ।[1] ये शिवाजी को तीक्ष्ण बुद्धि का परिचायक है कि वह अफ़ज़ल खान जैसे पराक्रमी तथा वीर को इतनी सुगमता से अनायास ही मार देते हैं ।[2] शिवाजी धीर प्रवृत्ति के थे कठिन से कठिन परिस्थिति में भी धैर्य से कार्य करते थे ।

शिवाजी ब्राह्मण की हत्या करना पाप समझते थे तभी तो अफ़ज़लखान की सेना के ब्राह्मण को मारने की इच्छा से समीप जा कर, ब्राह्मण है, इस प्रकार का पता लगने पर मारते नहीं छोड़ देते हैं ।[3]

---

1. एवमुक्त्वास तद्ग्रीवां धृत्वा वामेन पाणिना ।
   इतरेण च तत्कुक्षौनिचखान कट्टारिकाम् ।।

   निपुद्धविच्छिव: सद्यस्तद्धस्तोन्मुक्तकंधर: ।
   ध्वनिनाधीरघोरेण प्रतिध्वानितकन्दर: ।।

   प्रविशन्तीमात्मकुक्षिभागमभ्रान्तमानस: ।
   किंचिदाकुंचितांगस्तां शिव: स्वयमवंचयत् ।।

   ददाम्येतं कृपाणं ते गृहाण निगृहाण माम् ।
   इदं विनिगदन्नेवधीर: सिंहसमस्वर: ।।

   शिवभारत, अध्याय 21, श्लो0 34-37 , पृ0 6।

2. तं निर्यातयितुं वैरं प्रवृत्तोऽसौ महाव्रत: । शिव: कृपाणिकाग्रेण कुक्षावेव तमस्पृशत् ।।
   आपृष्ठं विद्विषत्कुक्षिं तूर्णं तेन प्रवेशिता । आकृष्यान्त्राणि सर्वाणि सा कृपाणी विनिर्गता
   शिवभारत, अध्याय 21 श्लो0 39-40, पृ0 6।

3. द्विजातिरिति तं श्रुत्वा जानान: शिवभूमिप: । अभ्येतमपि नो हन्तुमैच्छन्निजनयस्थिति: ।
   शिवभारत, अध्याय 21, श्लो0 48, पृ0 6।

शिवाजी सूर्यवंशी है और सूर्यवंशी युद्ध से पीठ दिखाकर भागने वाले तथा कायर के साथ युद्ध नहीं करते इसी कारण शिवाजी युद्ध से भागते हुए आदिलशाह के सेनापति रूस्तुम को पकड़ते नहीं, क्योंकि सूर्यवंशी डरने वाले व्यक्ति पर अपनी वीरता नहीं दिखाते हैं ।[1]

शिवाजी अत्यधिक सौम्य किन्तु प्रभाव से अतिभयंकर थे ।[2] जब कारतलबखान का दूत शिवाजी के पास जाता है तो शिवाजी कैसे लग रहे थे उसका वर्णन है -

ततोऽतिसुन्दरोदग्रग्रीवे व्यायतवक्षसि ।
शिक्षिते लक्षणोपेते महाकाये महौजसि ।।

पार्श्वद्वितयसंसक्त निषंगद्वयपक्षतौ ।
सरत्नाभरणे सप्तौ तार्क्ष्ये हरिमिव स्थितम् ।।

आमुक्तवारबाणानां धन्वबाणासिधारिणाम् ।
बहूनां वाहवाराणां व्यूहाभ्यन्तरवर्तिनम् ।।

पिनद्धाभेद्यवर्माणं वर्ण्यशौर्यशालिनम् ।
भव्यसव्येतरस्कन्धविबद्धविशिखासनम् ।।
वैकक्षिकीकृतोद्दामफलकोद्योतिताम्बरम् ।
स्वर्णसारसनालम्बिकौक्षेयककृतश्रियम् ।।[3]

---

1. तदनु शिवनृपस्तं प्राप्तभंग पुरस्तात्प्रसभमपसरन्तं रूस्तुमं त्रस्तमुच्चैः ।
निकटगमपि नैव न्यग्रहीत्क्रिमुहार्ह न हि विदधतिभीरौ शूरतां सूर्यवंश्याः ।।
शिवभारत, अध्याय 24, श्लो0 74, पृ0 72

2. ....। अतिसौम्यमपि स्वेन प्रभावेणातिभीषणम् ।।
शिवभारत, अध्याय 29, श्लो0 20, पृ0 86

3. शिवभारत, अध्याय 29, श्लो0 15-19, पृ0 86

इस प्रकार कवि ने शिवाजी के आन्तरिक तथा बाह्य चरित्र का सुन्दर काव्यमय चित्रण किया है । कवि ने शिवाजी को साक्षात् विष्णु का अवतार कहा है तभी तो शिवाजी के प्रणाल किले से बच निकलने की घटना को कवि ने 'देवी की कृपा से' ऐसा हुआ, इस प्रकार का वर्णन किया है -

भावस्या समादिष्टे शिवभूपे महाभुजे ।
ध्वजिनीं ताम्रवक्त्राणां पराभवितुमात्मना ।।

बलिनं बर्बरव्यूहं सद्यो भित्वा विनिर्गते ।
शिलोच्चये प्रणाले च दैवाद्हस्तमुपागते ।।[1]

जब शिवाजी प्रणाल किले से बच निकलते हैं तो आदिलशाह सिद्दि जौहर पर अत्यधिक क्रुद्ध होता है तथा कहता है कि तूने उस शिवाजी से धन लिया होगा , तभी तूने उसे जाने दिया जबकि कवि ने शिवाजी को अमानुष गति वाला बता कर तथा देवी ने मोह में डाल दिया इस प्रकार का काव्यमय वर्णन किया है -

अमानुषगतिर्देव्या: प्रसादेन सुदुर्धर: ।
मोहयित्वा परचमूं परिवेषमरां पराम् ।।

प्रयातो भूधरात्तस्माद्भूभृद्भृशबलो यदि ।
मन्यामहेवयं तर्हि नापराधी स जोहर: ।।[2]

काव्य होने के कारण कवि ने इस प्रकार का वर्णन किया है शिवाजी को अमानुष गति वाला कहकर कवि ने घटना का अन्य प्रकार से चित्रण किया है।

---

1. शिवभारत, अध्याय 28, श्लो0 13-14, पृ0 82
2. शिवभारत , अध्याय 28, श्लो0 23-24, पृ0 82

कवि का यह वर्णन काल्पनिक तथा काव्य-परम्परा के अनुसार है ।

श्री गो०स० सरदेसाई ने एक अन्य साधन के द्वारा इस घटना का इस प्रकार वर्णन किया है कि शिवाजी जब पन्हाला किले से विशालगढ़ की ओर भाग गए । उनके साथ उनके अनुरक्त सेवक बाजीप्रभु देशपाण्डे के नेतृत्व में स्वामि-भक्त अनुचरों की एक छोटी टोली थी । उनके भाग निकलने का पता शीघ्र ही चल गया तथा शत्रु के एक दल ने अति निकट से उनका पीछा किया । प्रात:काल पीछा करने वाले इतने समीप आ गए कि वे विशालगढ़ में शिवाजी के सकुशल प्रवेश में बाधक हो गए इस संकट क्षण में बाजीप्रभु देश पाण्डे ने अपने प्राण देकर अपने स्वामी ‖शिवाजी‖ की रक्षा की ।[1]

जब शाइस्ताखानचकावती ‖चाकण‖ किले पर अपना अधिकार कर लेता है तो शिवाजी अत्यधिक दु:खी होते हैं और कहते हैं कि चाकण के जाने का बहुत दु:ख है तभी शिवाजी ने शत्रु की शक्ति को पहचानकर कहा कि हमें सबसे पहले सेना की वृद्धि करनी है अधिक वेतन का लालच देकर सेना को बढ़ाना है तथा इसके लिए अर्थ ‖धन‖ की आवश्यकता है अत: सर्व प्रथम धन इकट्ठा करना चाहिए ,तभी हम दिल्ली के बादशाह औरंगज़ेब का जो मामा ‖शाइस्ताखान‖ है उसका मुकाबला

---

1. राजवाड़े 15, 363

कर पाएँगे ।[1]

शिवाजी अत्यधिक कुशाग्र बुद्धि था तभी तो कार्तलब की विशाल सेना का पराभव कर सका । जब कार्तलब की सेना सह्याद्रि से नीचे उतर गई तथा आगे चलने लगी तब शिवाजी ने उन पर आक्रमण किया , यदि शिवाजी एक -एक कर उतरते हुए सैनिकों पर आक्रमण करता तो कार्तलबखान का सैन्य-रास्ते में ही युद्ध हो रहा है, ये सोचकर वापिस हो जाता अत: ये शिवाजी की तीक्ष्ण बुद्धि का ही परिचायक है कि उसने अपने सैन्य को इधर उधर वृक्षों के पीछे, अपर इत्यादि अनेक स्थानों पर छिपा दिया था , जो दुन्दुभि का स्वर सुनते ही

---

1. इदानीमेव तां दुर्गसहितां दुर्ग्रहामपि । स्वयमभ्येत्य तामेभ्यो ग्रहीतुमहमुत्सहे ।।
परं स्वापतितं यदि कार्यान्तरमनन्तरम् । प्रयतिष्यामहे तस्मै वयं सर्वेऽप्यत:परम्।।

सहायपरिहीनेन नरेणैकेनकेनचित् । परीभावयितुं शक्या प्रतीपानामनीकिनी ।।
तस्माद्यत्नेन महता नरेन्द्रेण विपश्चिता । संग्राह्यानीकिनी शश्वत्परनिग्रहकारिणी।।

बहुनाऽर्थेन रहितो महानपि महीपति: । न तद्विधानां सेनानां संग्रहं कर्तुमर्हति।।
अर्थादर्थो भवत्युच्चैरर्थाद्धर्मोऽपि वर्धते । अर्थादेव तृतीयोऽर्थस्तस्मादर्थ: प्रशस्यते ।।

....।
तद्दुरध्वाडडस्य प्रभावेण पृथुवत्पृथिवीमिमाम् । तमर्थमाहरिष्यामि यदधीनमिदं जगत्।।

तदनन्तरमेवोच्चैस्तत्र दिल्लीन्द्रमातुले । करिष्यामि प्रतीकारमगस्त्य इव सागरे ।।

शिवभारत, अध्याय 28, श्लो0 31-41 , पृ0 82-83

मुगलों की सेना पर टूट पड़े [1] तथा शिवाजी को इस प्रकार विजय प्राप्त हुई और मुगल वापिस पूना लौट गए । कवि का यह वर्णन ऐतिहासिक है । श्री गो०स० सरदेसाई ने इस घटना का वर्णन करते हुए 'शिवभारत' को आधार माना है ।[2] इतिहास में यह घटना उम्बरखिण्ड के युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है ।

कवि ने वर्णन किया है कि शिवाजी ने राजपुर को जीत लिया राजपुर समुद्र के किनारे है जहाँ पर अंग्रेजों का अधिकार था । इन यूरोपियन्स को

---

1. आदावेवहि स्वः स्यात्स विरुद्धः शिवेन चेत् ।
   नापतिष्यत्समं सैन्यैस्तर्हितस्मिन्वनार्णवे ।।

   इत्थमेव विनिश्चित्य सतं भुजमदोद्धतम् ।
   न्यरुणत्किल नो तत्र समर्थोऽपि महीपतिः ।।

   अधस्तादथ सह्याद्रेः समायातं पुरः पुरः ।
   न्यरौत्सीदध्वनो मध्येतं शिवोऽभ्येत्य विद्विषम् ।।

   तेन राजन्यवीरेण पूर्वमेव नियोजितान् ।
   तत्र तत्र स्थितानेत्य भाग्योऽभयोरपि ।।

   संनद्धा पत्तिमूर्धन्यांस्तां वन्यामन्तराऽन्तरा ।
   नाविदन्नुपकण्ठस्थानपि दिल्लीन्द्रसैनिकाः ।।

   अथोदुम्बरखण्डाह्वगहनान्तरवर्तिनीम् ।
   वर्तनीं कारतलबः प्राविशत्पृतनान्वितः ।।

   ततः सद्यः स्वनन्तीनां भेरीणां निःस्वनोमहान् ।
   उपागतः शिव इति प्रतियोधानबोधयत् ।।
   शिवभारत, अध्याय 28, श्लो० 74-80, पृ० 84

2. मराठों का नवीन इतिहास, श्री० गो०स० सरदेसाई, पृ० 163-164

अग्नियन्त्र-बन्दूक,तोप इत्यादि चलाने में निपुण तथा अत्यधिक धनी कहा है। शिवाजी ने इन लोगों से भी कर ग्रहण कर लिया।[1] पृथ्वी के भीतर जो धन छिपा था उसको भी खुदवा लिया। बिना सिद्धांजन [2] लगाए ही वह शिवाजी समझ जाता था कि धन कहाँ छिपा हो सकता है। कवि ने पोर्तगोज़, उच, अंग्रेज इत्यादि लोगों को फिरंगी तथा यवनों से भी नीच कहा है। दूसरे द्वीपों से आने वाले इन लोगों से भारतीयों को बड़ा खतरा है इस बात को उस समय केवल शिवाजी ने ही पहचाना था।

---

1. अथाग्नियन्त्रसंधानविशेषोदग्रविक्रमान् ।
   प्राकारयुद्धकुशालानृद्ध्या जितधनेश्वरान् ।।
   भयमायाधरानब्धिमध्यसंचारदुर्धरान् ।
   उन्मार्गवर्तिनस्तांस्तान्फिरंगान्यवनावरान् ।।
   ....।
   ....।।
   असंमताश्च सामन्तान्मत्तानिव महाद्विपान् ।
   बलैरानाय्य स बली तत्तदानाययद्धनम् ।।
   स बद्धमुष्टिभिस्तैस्तैरविद्यौश्वरपालिताम् ।
   स्वहस्तमनयत्सद्यः श्रियं राजपुरस्थिताम् ।।
   निक्षिप्तस्वर्णसम्पूर्णकटाहजठरां धराम् ।
   खलान्तकः स खनकैरनेकैः समखानयत् ।।
   न यद्यपि नरेन्द्रस्य तत्र सिद्धांजनांचिते ।
   तदप्यद्धा निधानानिपश्यतः स्मक्षितोवने ।।
   न्ययोजयदयं राजा यत्र यत्र निजे दृशौ
   तत्र तत्राभवन्मेरुसदृशाः स्वर्णराशयः ।।

   शिवभारत, अध्याय 30, श्लो० 1-8, पृ० 88-89

2. एक ऐसा यन्त्र जिसको आखों पर लगा कर देखने से जमीन के अन्दर का धन दिखाई दे जाता है सिद्धांजन कहलाता है।

शिवाजी के विषय में सर जदुनाथ सरकार ने अपनी पुस्तक 'हाउस आफ शिवाजी' में स्वयं लिखा है कि 'एक हिन्दू नायक होने के नाते नहीं अपितु एक आदर्श गृहस्थ, एक आदर्श राजा तथा एक अद्वितीय राष्ट्र-निर्माता होने के नाते वह इतिहास के योग्य लोगों के वृहद् कक्ष में एक बड़े ऊँचे स्तम्भ पर विराजमान है । वह अपनी माता का भक्त, अपने बच्चों का प्रिय, अपनी पत्नियों के प्रति सच्चा तथा अन्य स्त्रियों के प्रति निस्सन्देह विशुद्ध सम्बन्ध रखने वाला व्यक्ति था युद्ध के सुन्दरतम् स्त्री-बन्दी को भी उसने 'माता' ही कहकर सम्बोधित किया । व्यक्तिगत जीवन को समस्त बुराइयों एवं आलस्य से मुक्त होकर उसने एक राजा तथा एक संगठनकर्ता के रूप में महत्तम प्रतिभा का प्रदर्शन किया । धार्मिक विचारों के उस युग में उसने सभी धर्मों के प्रति अत्यन्त उदार सहिष्णु नीति का अनुसरण किया ।'[1]

'शिवाजी की सेना में बहुत से मुसलमान कप्तान थे तथा उसकी जल-सेना का प्रधान सिद्दी मिस्त्री नाम का एक अबीसीनियन था । उसके मराठा सैनिकों को यह बड़ा आदेश था कि वह किसी स्त्री के साथ अवैध आचरण न करें अथवा किसी मुसलमान फकीर की कब्र अथवा आश्रम को नष्ट न करें । धावा करने के समय अपहृत कुरान की प्रतियों को सावधानी के साथ सुरक्षित रखने तथा तदनन्तर उन्हें किसी मुसलमान को आदरपूर्वक दे देने का आदेश दिया गया था ।'[2]

शिवाजी के राजनीतिक आदर्शों को स्वीकार करते हुए जदुनाथ सरकार का कथन है कि 'शिवाजी के पास प्रत्येक व्यक्ति के चरित्र एवं उसकी योग्यता को

---

1. हाउस ऑफ शिवाजी ‖ हिन्दी अनुवाद ‖ लेखक - सरजदुनाथ सरकार , ‖अनुवादक‖ विजयनारायण चौबे, पृ० 100
2. शिवाजी का राजवंश, जदुनाथ सरकार , पृ० 101

शीघ्रतापूर्वक समझने तथा प्रत्येक कार्य के लिए जिसे वे कराना चाहते थे, उत्तम औजार चुनने की एक अपूर्व राजकीय शक्ति थी । किन्तु वे स्वशिक्षित व्यक्ति थे । वे किसी बड़ी राजधानी, दरबार अथवा शिविर में नहीं रहे थे । उनके देश एवं समय के लिए पूर्ण उपयुक्त उनकी शासन तथा सैनिक पद्धतियाँ उनकी निजी सृष्टि थीं । रणजीतसिंह अथवा महादजी सिन्धिया की भाँति उनके पास कोई फ्रांसीसी सलाहकार अथवा लेफ्टिनेण्ट न था । प्रत्येक वस्तु उन्हीं के हृदय व मस्तिष्क की उपज थी । इसलिए शिवाजी का इतिहासकार आठ विभिन्न भाषाओं में उनके विषय में प्राप्त सभी लेखों को सावधानी के साथ अध्ययन कर लेने के पश्चात यह स्वीकार करने के लिए विवश हो जाता है कि शिवाजी केवल मराठा राष्ट्र के निर्माता ही नहीं थे, अपितु मध्यकालीन भारत के सबसे बड़े रचनात्मक प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्ति भी थे ।"[1]

---

1. सरजदुनाथ सरकार - हाउस ऑफ शिवाजी (हिन्दी अनुवाद), पृ० 102